26	माया तु शकता शावां कुसृतिनिकृतिश्च सा ॥ ३७७ ॥ ।।।	
	नपरं कैतवं दस्भः कूरं ह्झोषधिष्ठहल्म् । जामनेव वंतामा	
7.00	व्यपदेशा मिषं लतं निभं व्याती है विकासकार नित्त है	01
29 ,,	५०ई ॥ विमाननाम नामानाम ज्य कुर्कारः ॥ ३७८ ॥	-11
30	कुलना दम्भवर्षा च निक्रानक का किंद्रकेश का कार्निकेशि म	21
31	प्रमीत उपसंपनः पर्ताम्मानाः वर्ताम्मानाः है।	
32	व्यलीकमिसंधानं । :। । । ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।	
33	साधा सभ्यार्यसङ्जनाः ॥ ३७६ ॥ - नार्	21
34	देषिकदकपुराभागी है ॥ एक को ही बार्निक का निक्र के का	91
35	कर्णोतपस्तु इर्तनः। नामणमामाम	. 21
36	पिष्रानः सूचका नीचा दिजिहा मत्सरी खलः ॥ ३०० ॥	81
37	व्यसनार्त्तस्तूपर्ता-	61
38	॥ । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	20
39	दस्युः पारचरः स्तेनस्तस्करः पारिपन्थिकः ॥ इद्धाराम विकार	19
4.0	परिमाषिपरास्कन्धेकामारिकमिलामुचाः ।	22
41	यः पश्यता त्रहेदर्थं स चौरः पश्यतात्रहरः ॥ इद्वानानात् हि	1 68
42	चीर्यं तु चीरिका स्त्रेयं। का का कि	
43	। तिन्नाक्षात्रं तप्रकृतं धनुम् । तिन्नकः तनमंग्र	

26. Betrug, Schurkerei (5 W.). — 27. 28. Hinterlist (12 W.). — 29. 30. Heuchelei (3 W.). — 31. 32. Betrügerei (4 W.). — 33. Rechtschaffen (4 W.). — 34. Tadelsüchtig, der nur Fehler sieht (2 W.). — 35. 36. Ohrenbläser, Verräther (8 W.). — 37. Elend, vom Unglück gedrückt (2 W.). — 38—40. Dieb, Räuber (11 W.). — 41. Der im Angesicht des Besitzers stiehlt. — 42. Diebstahl (3 W.).